

8. बड़ा कौन

महाराज मल्लिक परमवीर, शक्तिशाली और प्रजा प्रेमी राजा थे। उनके राज्य में चारों ओर सुख-शान्ति थी। दुःख और दरिद्रता का कहीं भी नामोनिशान न था। सारी प्रजा महाराज को अपने पिता के समान समझती थी और महाराज भी प्रजा को अपनी सन्तान के समान समझते थे। यही नहीं महाराज के सभी दरबारी भी उनसे अत्यन्त प्रसन्न रहते थे।

प्रजा सदा महाराज के गुण गाती थी और महाराज सदा प्रजा के दुःखों को दूर करने में लगे रहते थे। दूर-दूर तक महाराज की वीरता का डंका बजता रहता था। आस-पास के सभी राजा उनका सम्मान करते थे और उनकी वीरता के आगे सिर झुकाते थे। अनेक राजाओं ने तो उनकी अधीनता तक स्वीकार कर ली थी। कोई भी उनके विरुद्ध युद्ध करने का साहस नहीं कर पाता था।

प्रजा को सदा अपने गुण गाते देख महाराज बड़ा ही सन्तोष अनुभव करते थे। एक बार उनके मन में एक विचार आया कि क्या प्रजा वास्तव में सच्चे मन से मेरे गुण गाती है, क्या मैं वास्तव में एक महान पराक्रमी राजा हूँ, क्या मुझमें गुण ही गुण हैं ? ऐसा तो नहीं हो सकता, क्योंकि विधाता की दृष्टि में शायद ही ऐसा कोई प्राणी हो जिसमें कोई दोष न हो। क्या मुझमें कोई दोष नहीं है ?

इस अंतिम प्रश्न ने महाराज को बेचैन कर दिया। वह रह-रहकर यही सोचते-क्या वास्तव में मुझमें कोई दोष नहीं है ? क्या मैं सर्वथा निर्दोष हूँ.....।

महाराज रात-दिन इसी विचार में डूबे रहते, किन्तु इसका निर्णय कैसे हो, यह प्रश्न उन्हें और भी अधिक बेचैन कर देता। आखिर में उन्होंने तय किया कि इसके लिए अपने दरबारियों और मंत्रियों से पूछताछ करनी चाहिए।

एक दिन महाराज का दरबार लगा हुआ था। उन्होंने अपने मंत्रियों को अपने पास बुलाया। पहले उन्होंने अपने महामात्य (प्रधानमंत्री) से पूछा - 'महामात्य। आप निर्भय होकर बताएँ कि हमारे विषय में आपके क्या विचार हैं ? क्या आपको हममें कोई दोष दिखाई देता है ?'

महाराज। आप विश्व के एक महान राजा हैं। आपके राज्य में प्रजा सब प्रकार से सुखी है। उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं है। प्रजा का सुखी होना इस बात का प्रमाण है कि उस राज्य का राजा एक योग्य और महान व्यक्ति है। आपमें गुण ही गुण हैं। दोष की तो आपमें कल्पना ही नहीं की जा सकती। आप धन्य हैं महाराज।'

महामात्य के इन शब्दों को सुनकर महाराज को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इसके पश्चात् उन्होंने अपने राजपुरोहित से पूछा - 'राजपुरोहित जी। आप हमारे पूज्य और आदरणीय हैं। आपकी विद्वता किसी से छिपी नहीं है। हमें आशा है आप जो कुछ ही कहेंगे, सत्य कहेंगे। अतः आप बताए

कि हममें कोई दोष तो नहीं है। आप एक ब्राह्मण हैं। एक सच्चा ब्राह्मण कभी असत्य नहीं बोल सकता।'

महाराज की बातें सुनकर राजपुरोहित बोले - 'महाराज। आप तीनों लोकों के श्रेष्ठ राजा हैं। आप विद्वानों और गुणीजनों का सम्मान करते हैं। आप धर्मपूर्वक राज्य चलाते हैं। आपके राज्य में सर्वत्र सुख और शान्ति है। अतः आप एक निर्दोष और आदर्श राजा हैं।'

राजपुरोहित की बातें सुनकर महाराज को भारी सन्तोष हुआ। इसके बाद उन्होंने अपने प्रधान सेनापति को बुलाया और बोले - 'सेनापति। आप एक सच्चे वीर हैं। अतः हम जो कुछ पूछें, उस विषय में अपने विचार साफ-साफ प्रकट करें। क्या हममें सब गुण ही गुण हैं ? क्या आपको हममें कोई दोष नज़र नहीं आता ?'

'महाराज। आप परम शक्तिशाली राजा हैं। आपकी वीरता का कोई अन्त नहीं है। आपके पड़ोस के सभी राजाओं ने आपकी अधीनता स्वीकार कर ली है। एक योग्य राजा के जो गुण होते हैं, वे सभी आपमें विद्यमान हैं। अतः आप में कोई दोष कैसे हो सकता है।'

सेनापति की बातें सुनकर महाराज को बड़ी प्रसन्नता हुई। इसके बाद दरबार की कार्यवाही विसर्जित हो गई।

मंत्री, पुरोहित और सेनापति के उत्तरों से महाराज को प्रसन्नता भले ही हुई पर सन्तोष नहीं हुआ। वे बार-बार यही सोचने लगे कि कहीं मुझे प्रसन्न करने के लिए ही तो इन लोगों ने मेरी प्रशंसा नहीं की। मुझमें कोई दोष है या नहीं, इसका निर्णय कैसे हो ? महाराज इस चिन्ता में डूब गए।

जनता ही वास्तव में राज्य है, क्योंकि भूमि, शासन, देश, सीमा आदि सब देश की जनता के जीवन को सुखी बनाने के लिए हैं। जनता का सुख ही राज्य का सुख है और जनता की आवाज़ राज्य की आवाज़ है। यदि जनता असन्तुष्ट रहे, तो वह राज्य कभी उन्नति नहीं कर सकता। जनमत किसी राज्य की सच्ची आवाज़ है।

हाँ जनमत। मुझे जनमत का पता लगाना चाहिए। महाराज ने मन ही मन निर्णय कर लिया कि वह अपनी जनता से पूछेंगे कि उनमें क्या दोष है ? अतः उन्होंने सारे राज्य में घोषणा करवा दी कि जनता राजमहल में पहुँच कर महाराज के प्रश्नों का उत्तर दे।

निश्चित दिन राज्य की प्रजा महाराज के महल में उपस्थित हुई। महाराज ने प्रजा के सामने कहा - 'प्रजाजनों। हमने आपको एक विशेष काम के लिए यहाँ बुलाया है। आप लोग बिना किसी प्रकार का भय किए अपने विचार स्पष्ट करें। हम जानना चाहते हैं कि हमारे राज्य में प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं है।'

'अन्नदाता। आप महान् हैं। आप जैसे महान राजा के होते हुए प्रजा को कष्ट कैसे हो सकता है। हम बहुत सुखी हैं। हमें कोई दुःख नहीं है', उपस्थित प्रजा ने एक स्वर से कहा।

‘अच्छा, आप लोग बिना किसी प्रकार का संकोच किए यह भी बताएं कि हममें दोष तो नहीं है, क्योंकि बिल्कुल निर्दोष तो केवल ईश्वर ही है। हम जानते हैं कि हम ईश्वर नहीं हैं।’

‘अन्नदाता। आप हमारे लिए ईश्वर से भी बढ़कर हैं। राजा ईश्वर का अंश होता है। हम परमात्मा को साक्षी करके कहते हैं कि आप में कोई दोष नहीं है। आप सर्वथा निर्दोष हैं।’

प्रजा के इस उज्जर से महाराज को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने प्रजा का आभार मानते हुए उसे विदा किया और स्वयं अपने महल में चले गए।

प्रजा के इस उत्तर से भी महाराज को सन्तोष नहीं हुआ। वे विचार करने लगे कि प्रजा हमसे प्रेम करती है। हमारे राज्य में उसे कोई कष्ट नहीं है। वह सब प्रकार से सुखी है, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि हम निर्दोष राजा हैं। प्रजा के प्रेम का अर्थ एक योग्य राजा होना भले ही हो, किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि राजा में कोई दोष ही नहीं है। जो जिसका प्रशंसक होता है, उसे उसमें कोई दोष दिखाई ही नहीं देता। हमारे राज्य का कोई भी व्यक्ति हमारे दोष नहीं देख सकता, किन्तु हमें अपने दोषों का पता लगाना है। अतः इसके लिए हमें अपने राज्य से बाहर जाना होगा।

ऐसा निश्चय कर महाराज ने दूसरी प्रातः अपने सारथि को बुलाया और उससे बोले, ‘हम भ्रमण के लिए जाना चाहते हैं। अतः रथ तैयार किया जाए।’

‘जो आज्ञा’, कहता हुआ सारथि निकल गया।

थोड़ी देर बाद द्वारपाल ने महाराज को सूचित किया कि रथ तैयार है।

‘अच्छा, हम चलते हैं,’ कहते हुए महाराज महल से बाहर आए। बाहर सजा-सजाया हुआ रथ खड़ा था। महाराज उसमें आसीन हुए और सारथि को चल पड़ने की आज्ञा दी।

रथ चल पड़ा। चलते-चलते महाराज अपने राज्य की सीमा से काफ़ी दूर निकल गए। रास्ते में उनके राज्य में जहां से भी उनका रथ गुज़रता था, प्रजा उनकी जय-जयकार करती हुई उन पर फूल बरसाने लगती थी। वह अपनी प्रजा से यह भी पूछते जाते थे कि उनके विषय में उसके क्या विचार हैं। सब जगह यही उत्तर मिलता था कि महाराज मल्लिक एक महान्, दयालु और पराक्रमी राजा हैं।

जब महाराज अपने राज्य की सीमा से बाहर निकल गए, तो उन्होंने सारथि को फिर रथ आगे बढ़ाने की आज्ञा दी। तभी मार्ग में एक छोटा-सा पुल आ पड़ा। पुल की चौड़ाई इतनी कम थी कि उसमें से एक साथ दो रथ नहीं गुज़र सकते थे।

महाराज का रथ ज्यों ही पुल के बीच में पहुँचा, तो उन्होंने देखा कि दूसरी ओर से भी एक रथ उनकी ओर बढ़ा चला आ रहा है। अब क्या हो, एक व्यक्ति को तो पीछे हटना ही पड़ेगा, किन्तु पीछे कौन हटे। दोनों में से कोई पीछे हटने को तैयार नहीं था।

उन दिनों समाज में यह नियम था कि किसी भी बड़े व्यक्ति के लिए, चाहे वह ज्ञान, आयु और गुणों में किसी में भी बड़ा क्यों न हो, रास्ता छोड़ना पड़ता था, यही विचार कर महाराज मल्लिक

का सारथि ऊँची आवाज़ में बोला - 'अरे भाई। रास्ता दो। मेरे रथ में महाराज मल्लिक बैठे हुए हैं जो काशी नरेश से भी महान पराक्रमी राजा हैं। अतः आपको रास्ता छोड़ना पड़ेगा।'

स्पष्ट था कि मल्लिक का सारथि उन्हें काशी नरेश से भी महान सिद्ध करना चाहता था। तब काशी नरेश का सारथि बोला -

'यदि आपके स्वामी मल्लिक राजा हैं तो मेरे स्वामी ब्रह्मदत्त भी काशी के महाराजा हैं। अतः आपको मेरे स्वामी के लिए रास्ता छोड़ना पड़ेगा।'

बड़ी विचित्र समस्या पैदा हो गई थी। दोनों ही राजा थे। अब बड़ा कौन है ? इसका निर्णय कैसे हो ? अतः तय हुआ कि दोनों राजाओं में जिसकी अवस्था बड़ी हो वही बड़ा होगा, किन्तु इसका पता लगाने पर मालूम हुआ कि दोनों की अवस्था बराबर है। फिर राज्य पर विचार किया गया कि किसका राज्य बड़ा है, किन्तु आश्चर्य कि दोनों का राज्य बराबर निकला। समस्या ज्यों की त्यों रह गई। कौन पीछे हटे ? इस प्रश्न ने दोनों राजाओं को चिन्ता में डाल दिया। तब काशी नरेश ब्रह्मदत्त बोले - 'व्यक्ति की महानता उसके गुणों में होती है, गुणवान व्यक्ति ही महान होता है। अतः हे महाराज मल्लिक। यदि आप अपने को बड़ा मानते हैं, तो अपने गुणों के विषय में बताइये।'

इस पर महाराज मल्लिक बोले - 'हे काशी नरेश। सुनिए, मैं उपकारी के साथ उपकार करता हूँ और बुरे के साथ बुराई।'

'यदि यही आपका सिद्धान्त है तो इसमें बड़ी बात नहीं। मैं तो इसे बहुत बड़ा दोष मानता हूँ। ऐसा दोष कि जिससे बड़ा दोष और कोई हो ही नहीं सकता' काशी नरेश ने कहा।

'महाराज ब्रह्मदत्त। यह आप क्या कहते हैं ?'

'हां, मैं ठीक ही कहता हूँ।'

'किन्तु मेरे राजपुरोहित, मंत्री, सेनापति और सारे प्रजा-जन तो मुझे निर्दोष मानते हैं। उनका तो कहना है कि मैं विश्व का सबसे महान राजा हूँ। मुझमें गुण ही गुण हैं। कोई दोष है ही नहीं।'

'किन्तु मैं ऐसी नहीं मानता।'

'तब आपमें कौन-से गुण हैं ? आप अपने ही गुणों के विषय में बताइये।'

'महाराज मल्लिक। मैं भलाई के बदले में भलाई तो करता हूँ, किन्तु जो मेरे साथ बुरा करता हैं, मैं उसके साथ भी भला करता हूँ।'

काशी नरेश ब्रह्मदत्त के मुँह से इन शब्दों को सुनते ही महाराज मल्लिक अत्यन्त प्रभावित हुए। उसने सोचा कि भलाई करने वाले के साथ भलाई तो सभी करते हैं, किन्तु महान वही है जो बुराई करने वाले के साथ भी भलाई करे। अतः उन्होंने काशी नरेश को प्रणाम करते हुए कहा -

‘महाराज ब्रह्मदत्त । आप निश्चय ही महान हैं । मैं आपको प्रणाम करता हूँ । आपसे मिलकर ही मुझे अपने दोषों का पता लग पाया है ।’

महाराज मल्लिक ने अपने सारथि को रथ पीछे हटा लेने की आज्ञा दे दी ।

अभ्यास

1. महाराज मल्लिक का राज्य कैसा था ?
2. जनता ही वास्तव में राज्य है कैसे ?
3. लेख के अनुसार राजाओं की महानता स्पष्ट कीजिए ।
4. इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

